कबीर के पद 2

संतो आई ज्ञान की आंधी रे

शब्दार्थ:- ज्ञान की आंधी- ज्ञान का प्रकाश, आंधी -अज्ञान को उड़ा ले जाने वाली, भ्रम -अज्ञान, टाटी -छप्पर, बलिंडा- छत को आपस में जोड़ने वाली मोटी लकड़ी, थूनी-टाट को एक जगह जहां बांधा जाता है। तृष्णा- माया, कामना, नीरचु चुवै न पाणी- पानी नहीं चुता है। जोग जुगती करि संतौ बांधी- यत्न पूर्वक बनाई गई झोपड़ी, कूड कपट काया का निकस्या- काया का अंधकार निकल गया, आंधी पीछै जो जल बूठा- आंधी के पश्चात जो जल बरसा है, तम खीनाँ- अंधकार दूर हो जाना।

गुरु का ज्ञान जब प्रकाशित होता है। तब विषय विकारों का अंधेरा दूर हो जाता है। गुरु से प्राप्त ज्ञान की तीव्र धारा में भ्रम माया और तृष्णा की टाटी उड़ जाता है और अज्ञान अब यहां नहीं रह जाता। लोभ के खंभे गिरने लगते हैं और मोह का बलिंडा टूटने लगता है। जब तृष्णा को बांधे रखने वाले माया रूपी खंभे टूटने लग जाते हैं तो छत टूट कर अंदर गिरती है और कूबुद्धि का भांडा फूटने लग जाता है। आंधी के पश्चात होने वाली बरसात से (यानी की बरसात से समय) के साथ इकट्ठा हो चुका कूड़ा करकट भी साफ हो जाता है। इस ज्ञान की बरसात में सभी ज्ञानी भीग जाते हैं। ज्ञान के प्रकाश के कारण मोह माया का अंधेरा दूर होने लगता है ।वस्तुतः इस शबद में कबीर ज्ञान की महिमा के बारे में बता रहे हैं और ज्ञान को आंधी का रूप देकर परिणामों के बारे में भी बता रहे हैं। ज्ञान की आंधी से अज्ञान का अंधेरा दूर हो जाता है। और उसे प्रश्रय देने वाले तत्व जैसे तृष्णा और माया सब समाप्त हो जाते हैं।

4) दुलहिन गावो मंगल चार।"

रहस्यवाद की अंतिम स्थिति आत्मा और परमात्मा का चीर मिलन मानी गई है। कबीर ने बड़े ही ओजस्वी शब्दों में इस अंतिम स्थिति का उद्घाटन किया है। इस मिलन की अवस्था का रूपक बांधते हुए कबीर ने स्वयं को दुलहिन बताया है। तथा राम को प्रियतम कहा है। विवाह होने पर जिस प्रकार पति पत्नी परस्पर मिलते हैं, उसी प्रकार अत्यंत प्रेम पूर्वक आत्मा और परमात्मा का मिलन हो रहा है। कबीर दास कहते हैं कि मंगलाचरण गाओ। हमारे घर राजा राम पति के रूप में आए हैं। अब मैं शरीर और मन से रति करूंगी। मेरे प्रियतम के साथ पंचतत्व बाराती बनकर आए हैं। और मुझ युवती के साथ विवाह करने के लिए राजा राम दूल्हा बनकर आए हैं। मैं अपने शरीर सरोवर पर ही वेदी बनाऊंगी, और स्वयं ब्रह्मा आकर वेद मंत्रों का उच्चारण करेंगे। रामदेव के साथ मेरी भाँवनरे पड़ेगी। मेरे अहोभाग्य हैं। तैंतीस कोटि देवता और 88 हजार मुनि सभी मेरे विवाह को देखने आए हैं। और मैं एक अविनाशी पुरुष से विवाह करके उसके साथ जा रही हूँ। विवाह के उपरांत सुहागरात में जिस प्रकार पत्नी प्रियतम से मिलती है। उसी प्रकार यह मिलन बड़ा ही अनुपम एवं अद्भुत होता है। और इसके उपरांत आनंद की उपलब्धि होती है। कबीर ने इस आनंद की ओर संकेत करते हुए कहा है कि भगवान शीतल संगति के कारण मेरे हृदय में विद्यमान मोह की ताप मिट गई है। अब हृदय में साक्षात्कार हो जाने के कारण मैं रात-दिन निधि प्राप्त कर रहा हूं।